ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 114-115
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

महाभारत में वर्णित धर्मनीति

निहारिका चतुर्वेदी
एसोसिएट प्रोफेसर– संस्कृत विभाग, एस0आर0के (पी0जी0) कॉलेज फिरोजाबाद (उ0प्र0), भारत

प्रस्तुत शोध पत्र में यह प्रयास किया गया है कि धर्म किस प्रकार से मानव के अधिकारों एवं कर्तव्यों तथा मर्यादाओं को द्योतक है। भारतीय धर्म शास्त्रों में दया भाव की असीमित परिकल्पना का चित्रण भी इस शोध पत्र में किया गया है। महाभारत की वर्तमान समय में क्या उपादेयता है, इस बात को जानने का प्रयास शोध पत्र के माध्यम से किया गया है।

धर्मशब्द (धृ) धारण–पोषणयोः धातु से 'मन्, प्रत्यय करके निष्पन्न हुआ है। संस्कृत व्याकरणविद् 'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से करते हैं, जैसे 'धारयते लोकम् इति धर्मः, 'धरति लोकम् इति का धर्मः' 'ध्रियतेलोकोऽनेन इति धर्मः' इन व्युत्पत्तियों के अनुसार जो तत्व प्राणियों को धारण, पालन–पोषण करता हुआ, उन्हें सुख–शन्ति से आप्यायित करता है तथा अवलम्बन देता है उसे धर्म कहते है। चाणक्य ने भी धर्म को परिभाषित किया है। धर्म में समाज को धारण करने योग्य है। वैदिक वाड्मय में धर्म शब्द अधिकांशतः धार्मिक विधियों अथवा धार्मिक क्रियाओं, संस्कारों के रूप में प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद में ही प्रयुक्त प्रथमा धर्माः तथा सनता धर्माणि में धर्म शब्द प्रथम तथा प्राचीन विधि अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वैशैषिक दर्शन के अनुसार ऐहिक–अभ्युदय और पारलौकिक निःश्रेयस् की उपलब्धि जिससे होती है, वही धर्मः है। धर्म शब्द मानव के कर्तव्यों एवं अधिकारों उसकी मर्यादाओं एवं बन्धनों का द्योतक है, और अधिकारों का दर्शन भी है। श्रीमद् भगवद्गीता का उपदेश सार 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मो भयावहः' में प्रयुक्त धर्म शब्द इसी अर्थ की प्रकट करता है। महाभारत के अनुसार जो व्यवहार हमें अपने लिये अनुचित लगता है, वह व्यवहार दूसरों के साथ न करना ही धर्म है। अहिंसा की श्रेष्ठता भीष्म के कथनों से भी सिद्ध होती है। अहिंसा को श्रेष्ठ धर्म बताते हुए नारद जी ने माना है कि अहिंसा ही सम्पूर्ण धर्म है। हिंसा अधर्म और अहितकारी है, श्रेष्ठ पुरूषों के लिया अहिंसा ही श्रेष्ठधर्म है।

भारतीय धर्मशास्त्रों में दया का महत्वपूर्ण स्थान है। संयासी लोग तो मार्ग में आने वाली चींटी के प्रति भी दयाभाव रखते हैं कि कहीं उसकी भी अज्ञानतावश मृत्यु न हो जाये। विश्व में संयम ही सब मनुष्यों के लिये हितकारी है। अंसयमी पुरूषों से सभी प्राणियों को सदा भय बना रहता है। संसार में दम ही कल्याण का साधन है। दम तेज की वृद्धि करता है। विदुर जी के अनुसार जो दमरूपी गुण से युक्त है, उसी को दान, क्षमा और सिद्धि का यथार्थ लाभ प्राप्त होता है, क्योंकि दम ही दान, तपस्या, ज्ञान और स्वाध्याय का संपादन करता है। दमन शील पुरूष काम, लोभ, अभिमान, क्रोध, निंद्रा, आत्मप्रशंसा इन सभी दुर्गुणों से मुक्त रहता है। कुटिलता और शठता का अभाव तथा आत्मशुद्धि यह दमयुक्त पुरूष का लक्षण है। विदुर जी के अनुसार चारों आश्रमों में दम ही उत्तम व्रत है। महर्षियों ने अपने मन और इंद्रियों के दमन द्वारा ही इहलौकिक– पारलौकिक अभ्युदयों की प्राप्ति की है। संयमी पुरूष घर में रह करके ही मोक्ष की प्राप्ति कर लेता है। किसी दूसरे की वस्तु के प्रति अनासक्ति का भाव रखना, मन को नियंत्रित रखना ही दम है, और दम की प्राप्ति ज्ञान द्वारा ही संभव होती है। क्रोध पर नियंत्रण प्राप्त करके व्यक्ति श्रेष्ठता को प्राप्त होता है। यह क्रोध धर्म का नाशक होता है, इसलिये श्रेष्ठ मनुष्यों को क्रोध मिटाकर उत्तम आचरण करना चाहिये।

विश्व में समस्त धर्मों में क्षमा श्रेष्ठ गुण है। क्षमाशील मनुष्य को ही साधु पुरूष कहते हैं। भगवान् श्री कृष्ण के अनुसार क्षमा ही यश, दान, यज्ञ और मनो निग्रह है। अहिंसा धर्म और इंद्रियों का संयम क्षमा के ही स्वरूप हैं। क्षमा पर ही समस्त विश्व आधृत है, अतः जो क्षमाशील है वही देवता कहलाता है। शम (मनोनिग्रह) ही क्षमाशील साधकों को सिद्धि की प्राप्ति कराने वाला है। क्षमाशील व्यक्ति विद्वान होते हैं, किन्तु क्रोधी मनुष्य अल्पज्ञ होता है। जब मनुष्य सहनशील होता है तभी उसे ब्रह्म भाव की प्राप्ति होती है। क्रोध प्रजावर्ग के नाश और अवनति का कारण होता है, यदि राजा क्रोधी है जो प्रजा का नाश निश्चित है। विश्व में सत्य से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है। सत्य बोलने वाले मनुष्य के ह्रदय में ईश्वर का वास होता है। सत्पुरूषों में सदा सत्यरूप धर्म का ही पालन हुआ है। नित्य एक रस, अविनाशी और अविकारी होना ही सत्य का लक्षण है। समस्त धर्मों के अनुकूल कर्तव्यपालन रूप योग के द्वारा ही इस सत्य की प्राप्ति होती है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं और झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है। सत्य ही धर्म की आधारशिला है, अतः सत्य का लोप नहीं करना चाहिये। सत्य से ही व्यक्ति, समाज दोनों की वृद्धि होती है। जिस प्रकार से माता के समान कोई गुरू नहीं है, उसी प्रकार सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

प्रकृति के तीन गुण माने गये हैं सत्व, रजस् और तमस्। सत्व गुण सर्वश्रेष्ठ है और वह धर्म और तप का

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

सहकारी है। सत्वगुण के उत्कर्ष से मनुष्य में नैतिक गुण और धार्मिक भाव उत्पन्न होते हैं। महाभारत में सत्वगुण को धर्म और तप में उपयोगी माना गया है। ब्रह्मा जी ने भी सत्वगुण को श्रेष्ठतम माना है। भारतीय धर्म में दान का भी महत्व पूर्ण स्थान है। दान देने से मनुष्य का मनशुद्ध होता है उसको स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य आलस्य और प्रमाद का त्याग करके अहिंसा का पालन करते हुए दान आदि शुभकर्म करता है, तो उसे इन पुण्य कर्मों के कारण स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। अन्नदान के समान पवित्र एवं पुण्यदायक दूसरा दान नहीं है। वेदों में अन्न को प्रजापति माना गया है। विशुद्ध मन से उत्तम समय पर सत्पात्र को थोड़ा भी दान दिया गया हो, तो वह परलोक में अत्यन्त फलदायी सिद्ध होता है। पृथिती अचल और अक्षय है, इसलिये पृथ्वी का दानश्रेष्ठ है। वस्त्र, रत्न, पशु, धन, जौ, आदि नाना प्रकार के अन्नों को देने वाली पृथिवी का दान प्राणियों में सर्वाधिक अभ्युदयशील होता है। जो देवों, पितरों,. ऋषियों, ब्राह्मणों, अतिथियों को अन्न देकर संतुष्ट करता है, उसके पुण्य का फल अप्रतिमा है।

भारतीय संस्कृति में गुरूजनों की सेवा तथा पूजा करना परम धर्म माना गया है। महाभारत में आचार्य, ऋत्विज, प्रिय मित्र, सम्बन्धी, स्नातक मित्र तथा राजा, इन सभी को अर्ध्य देकर पूजन करना श्रेष्ठ माना जाता है। श्री कृष्ण ने चण्डकौशिक मुनि के आगमन पर मगध नरेश द्वारा पूजन–अर्चन की बात स्वीकारी है। पाद्य, अर्ध्य और आचमनीय आदि के द्वारा राजा ने महर्षि का पूजन किया और अपने सारे राज्य के सहित पुत्र को उन्हें सौंप दिया। उन्नति के इच्छुक पुरूषों के पाँच गुरू पिता, माता, अग्नि, परमात्मा तथा गुरू माने गये हैं। गुरू के सन्तोष से वेद नामक शिष्य ने श्रेय तथा सर्वज्ञता प्राप्त की थी। अंग्रेजों की सेवा करने से मनुष्य का मन तो प्रसन्न होता ही है, तथा उसकी कीर्ति भी चतुर्दिक फैलती है।

महाभारत में हमें धर्म के तत्व सर्वत्र प्रकीर्ण मिलते है। दया, सहिष्णुता, क्षमा, परोपकार, अंग्रेजों की सेवा आदि ऐसे गुण है, जिनकी उपादेयता आज भीवनी हुई है। मनुष्य यदि इन गुणों को अपने आचरण में उतारता है तो न केवल स्वराष्ट्र अपितु संपूर्ण विश्व ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। 'महाभारत' जैसे कालजयी महाकाव्य में वर्णित गुणों के कारण मनुष्य इहलौकिक एवं पारलौकिक भ्युदय को प्राप्ति कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. धर्मेण धार्यते लोकः। चाणक्य सूत्र । धारणात् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजा। यत् स्यात् धारणा संयुक्त स धर्म इति निश्चयः।। महाभारत कर्णपर्व 49/50.
2. समिध्यमानः प्रथमानुधर्मा समक्तुभिरज्यते विश्ववारः। ऋग्वेद 3/17/1.
3. अग्निर्हि देवॉ अमृतो दुवस्यत्यथा धर्मणिसनता न दू दुषतः। ऋग्वेद 3/3/1.
4. अथातोधर्मः व्याख्यास्यामः यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस् सिद्धिः स धर्मः। वैशेषिक सूत्रं 1/1.
5. अहिंसा परमो धर्मः सर्व प्राण भृतांवर। आदि पर्व अध्याय 11/13.
6. तस्प दानं क्षमा सिद्धिर्य भावदुपपद्यते। दमोदानं तपो ज्ञानम धीतं चानुवर्तते।। उद्योग पर्व अध्याय 63/9,10.
7. दमो नान्यस्पृहा नित्यं गाम्भीर्यं धैयमेव च अभयं रोगशमनं ज्ञानेनै तदवाप्यते।। शन्ति पर्व 162/12.
8. क्षमा यशः क्षमा दानंक्षमा यज्ञः क्षमा दमः। क्षमावान् ब्राहमणो देवः क्षमावान् ब्राहमणों वरः।। आश्वमेंधिक पर्व 92 अध्याय।
9. क्षमावतो हि भूतानां जन्म चैव प्रकीर्तितम्। क्षमा तपः क्षमाशौचं क्षमयेदं धृतं जगत् ।। वनपर्व अध्याय 29/32/37.
10. नास्ति सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातंक परम्।। शान्ति पर्व अध्याय 162/24.
11. सत्वं वैकारिकी योनिरिन्द्रियाणां प्रकाशिका। न हि सत्वात् परोधर्मः कश्चिद न्यो विधीयते।। आश्वमेधिक पर्व 39/9.
12. तव वैमानुषाल्लोकाद् दानाति भिरतन्द्रितः। अहिंसार्थ समायुक्तैः कारणैः स्वर्गमश्नतुते।। वन पर्व 181/10.
13. पाद्यार्घ्याचमनीयं स्तमर्चचायमास भरत। स नृपोराज्य सहिंत पुत्रं तस्मै न्यग्देयत्।। सभापर्व 19/3.

*****